NEEV
2027
गद्य खंड
रीढ़ की हड्डी
Lec-08
CLASS 9th
हिंदी
अदिति मैम

पाठ सूची

1. लेखक परिचय
2. रीढ़ की हड्डी
3. बहुविकल्पीय प्रश्न
4. बोधात्मक प्रश्नोत्तर
5. लघु उत्तरीय प्रश्न

Aditi Ma’am
JOIN MY OFFICIAL TELEGRAM CHANNEL
@PWADITIPUROHITMAAM

HELL
CUTIES..!

जगदीश चंद्र माथुर

एकांकी → छोटा सा नाटक

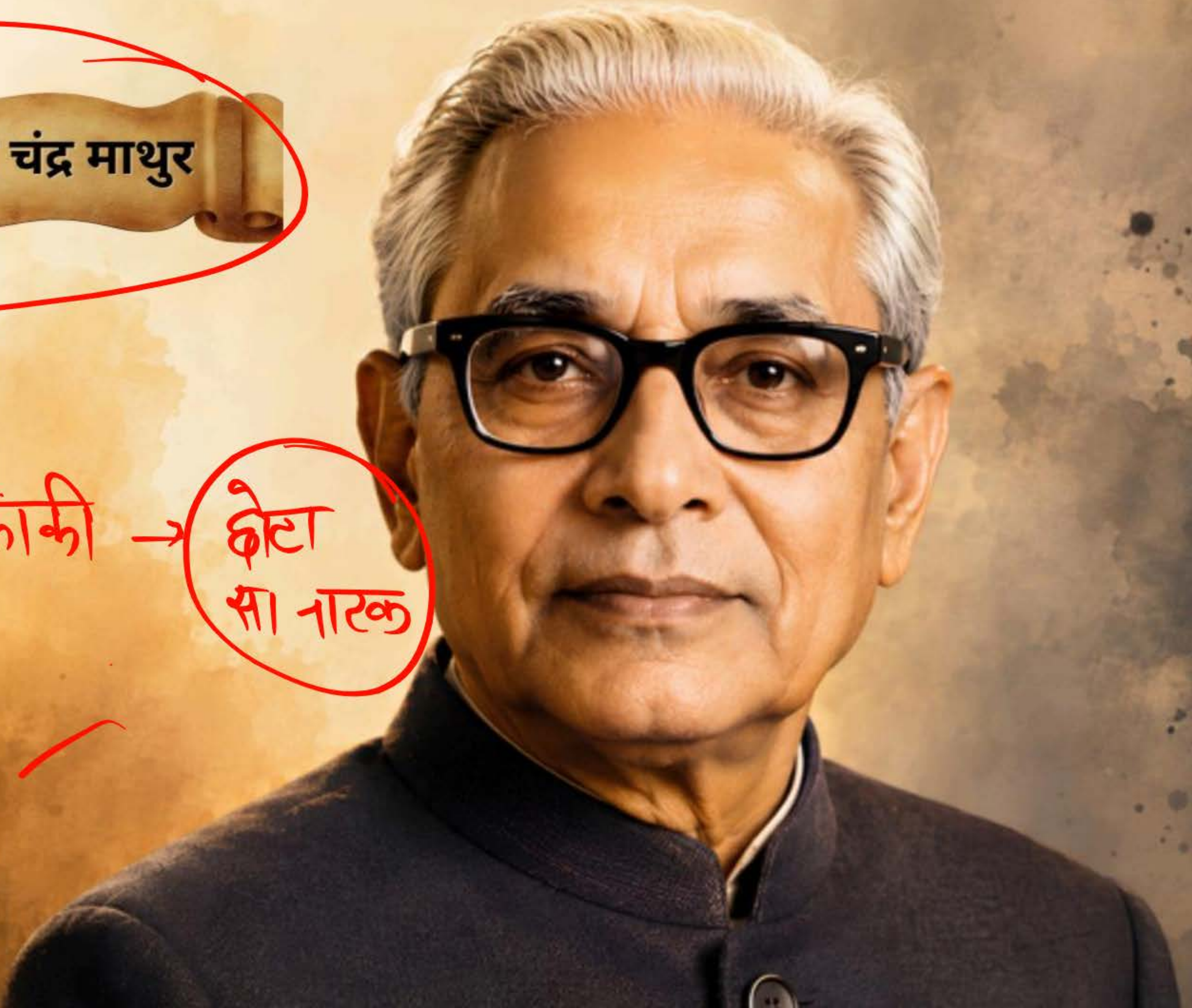

जगदीशचंद्र माथुर का जन्म सन् 1917 में शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश में हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और इंडियन सिविल सर्विस में चयनित हुए। बिहार के शिक्षा सचिव, आकाशवाणी के महानिदेशक तथा सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के संयुक्त सचिव जैसे पदों पर कार्य करते हुए वे साहित्य-सृजन में सक्रिय रहे।

प्रयोग के अध्ययन के दौरान ही उन्होंने लेखन शुरू किया और चाँद तथा रूपाभ जैसी पत्रिकाओं में उनके नाटक-एकांकी प्रकाशित होने लगे। हिंदी नाटक और रंगमंच के विकास में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं— भोर का तारा, कोणाक, ओ मेरे सपन, शारदिया, पहला राजा, दस तस्वीरें और जिन्होंने जीना जाना। 'कोणार्क' उनका सर्वाधिक चर्चित एवं मंचित नाटक है। सन् 1978 में उनका निधन हुआ।

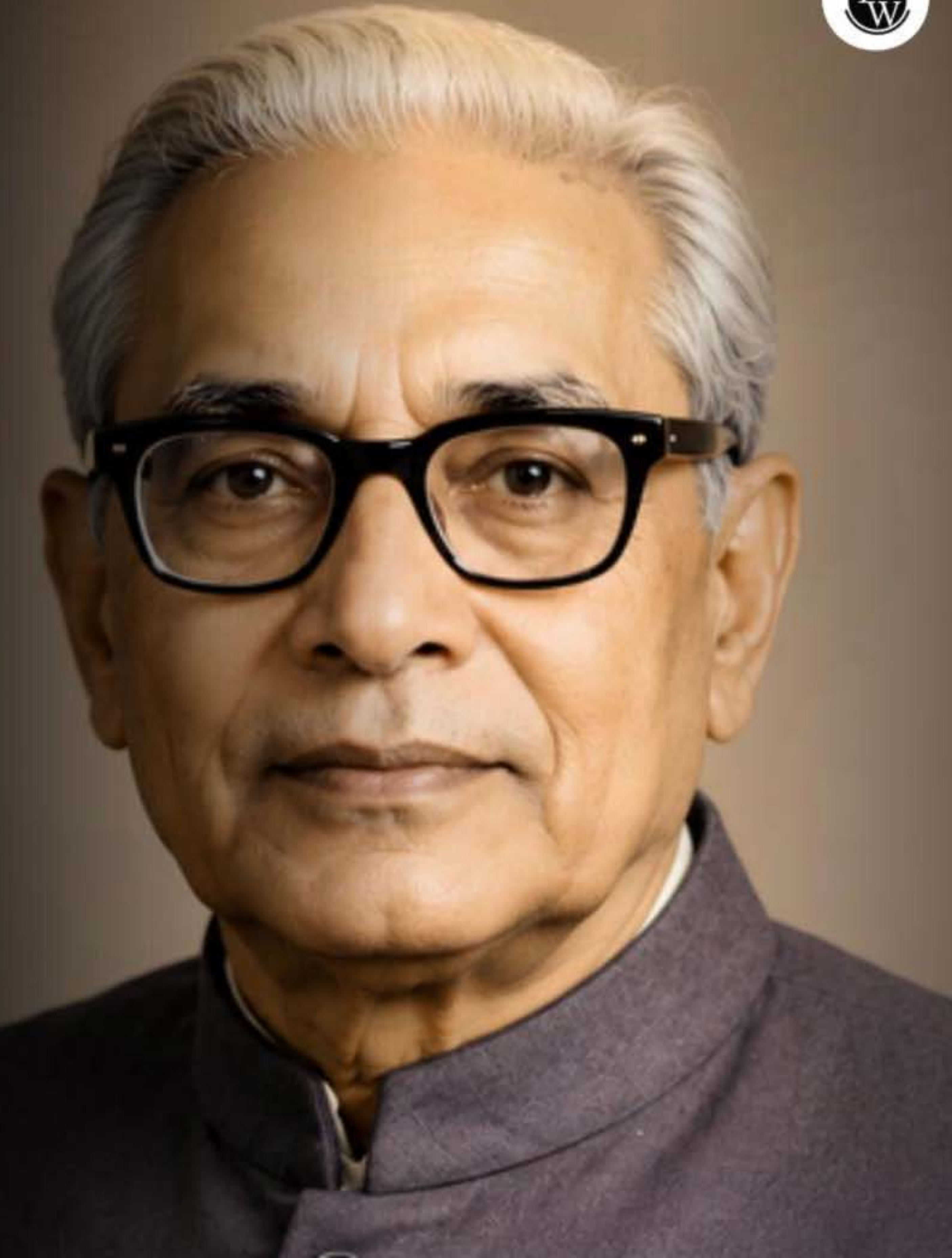

रीढ़ की हड्डी

– जगदीश चंद्र माथुर

(मामूली तरह से सजा हुआ एक कमरा। अंदर के दरवाज़े से आते हुए जिन महाशय की पीठ नज़र आ रही है, वे अधेड़ उम्र के मालूम होते हैं | एक तख्त को पकड़े हुए पीछे की ओर चलते-चलते कमरे में आते हैं। तख्त का दूसरा सिरा रतन ने पकड़ रखा है।)

बाबू : अबे धीरे-धीरे चल | ... अब तख्त को उधर मोड़ दे... उधर... बस, बस ! (तख्त के रखे जाने की आवाज़ आती है।)

रतन : बिछा दूँ साहब ?

बाबू : (जरा तेज़ आवाज़ में) और क्या करेगा? परमात्मा के यहाँ अक्ल बँट रही थी तो तू देर से पहुँचा था क्या?... बिछा दूँ साब... और यह पसीना किसलिए बहाया है?

रतन : (तख्त बिछाता है) ही-ही-ही।

बाबू : हँसता क्यों है?... अबे, हमने भी जवानी में कसरतें की हैं, कलसों से नहाता था लोटों की तरह। यह तख्त क्या चीज़ है?... उसे सीधा कर ...यों ...हाँ बस। ... और सुन, बहू जी से दरी माँग ला, इसके ऊपर बिछाने के लिए। चद्दर भी, कल जो कपड़े धोने वाले के यहाँ से आई है, वही।

(रतन जाता है। बाबू साहब इस बीच में मेज़पोश ठीक करते हैं। एक झाड़न से गुलदस्ते को साफ़ करते हैं। कुर्सियों पर भी दो चार हाथ लगाते हैं। सहसा घर की मालकिन प्रेमा आती हैं। गंदुमी रंग, छोटा कद। चेहरे और आवाज़ से ज़ाहिर होता है किसी काम में बहुत व्यस्त हैं।

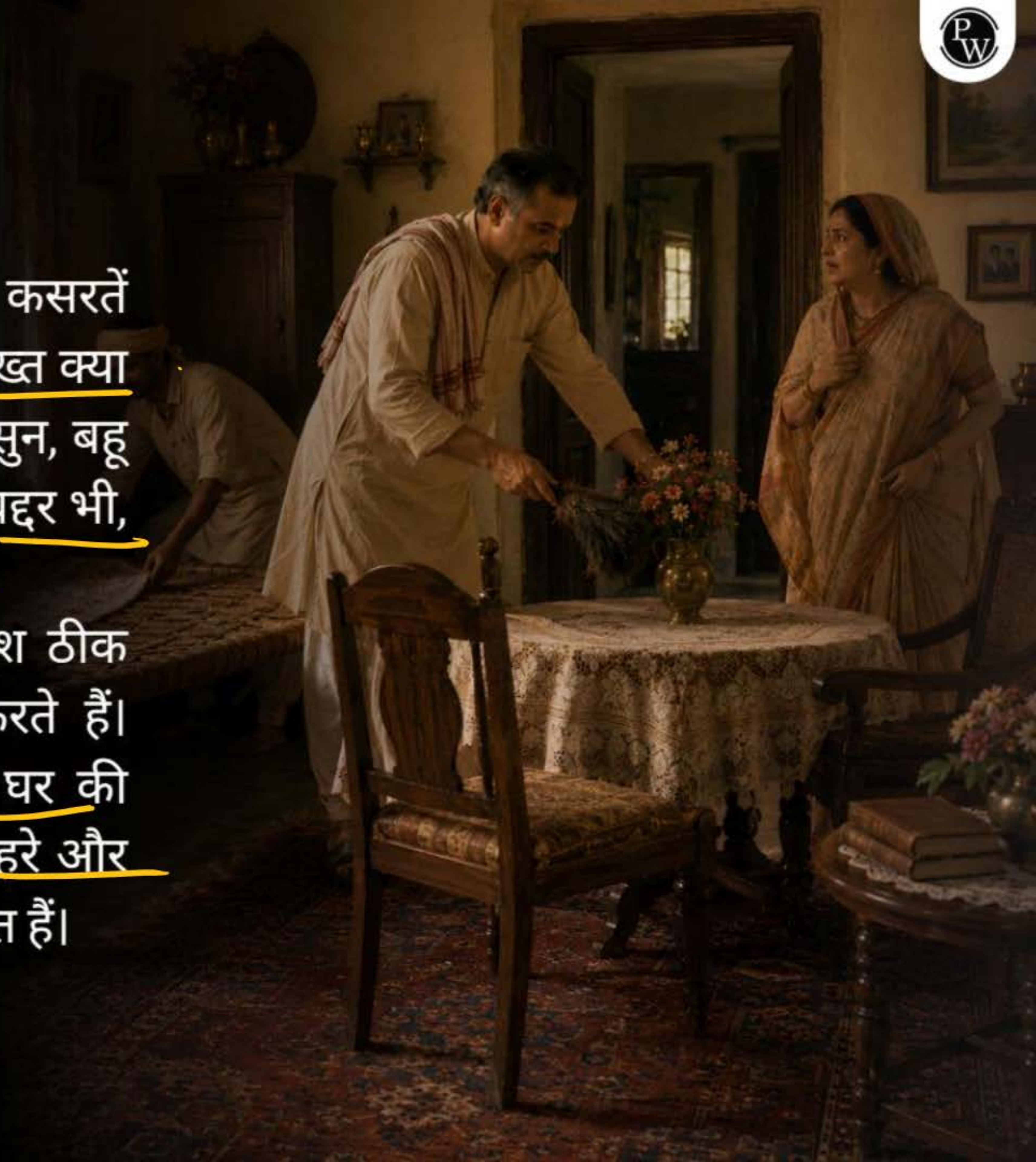

उनके पीछे-पीछे भीगी बिल्ली की तरह रतन आ रहा है- खाली हाथ। बाबू साहब (रामस्वरूप) दोनों तरफ़ देखने लगते हैं...)

प्रेमा : मैं कहती हूँ तुम्हें इस वक्त धोती की क्या ज़रूरत पड गई! एक तो वैसे ही जल्दी-जल्दी में...

रामस्वरूप : धोती ?

प्रेमा : हाँ, अभी तो बदलकर आए हो, और फिर न जाने किसलिए...

रामस्वरूप : लेकिन तुमसे धोती माँगी किसने ?

प्रेमा : यही तो कह रहा था रतन।

रामस्वरूप : क्यों रतन, तेरे कानों में डाट लगी है क्या? मैंने कहा था- कपड़े धोने वाले के यहाँ से जो चद्दर आई है, उसे माँग ला... अब तेरे लिए दूसरा दिमाग कहाँ से लाऊँ। उल्लू कहीं का।

प्रेमा : अच्छा, जा, पूजावाली कोठरी में लकड़ी के बक्स के ऊपर धुले हुए कपड़े रखे हैं न! उन्हीं में से एक चद्दर उठा ला।

रतन : और दरी?

प्रेमा : दरी यहीं तो रक्खी है, कोने में। वह पड़ी तो है।

रामस्वरूप : (दरी उठाते हुए) और बीबी जी के कमरे में से हरिमोनियम उठा ला, और सितार भी।... जल्दी जा।

(रतन जाता है। पति-पत्नी तख्त पर दरी बिछाते हैं।)

प्रश्न

रामस्वरूप और रतन कमरे में क्या लेकर आ रहे थे?

(क) मेज़

(ख) तख्त

(ग) कुर्सी

(घ) संदूक

प्रश्न

रामस्वरूप ने रतन को धोबी के यहाँ से आई हुई किस वस्तु को लाने के लिए कहा था?

(क) दरी

(ख) चादर

(ग) मेज़पोश

(घ) पर्दा

प्रश्न

रामस्वरूप तख्त के ऊपर क्या बिछाने के लिए रतन से लाने को कहते हैं?

(क) कालीन और चादर

(ख) दरी और चादर

(ग) पर्दा और दरी

(घ) मेज़पोश और कालीन

प्रश्न

रामस्वरूप ने रतन को बीबी जी के कमरे से क्या लाने के लिए कहा?

(क) हारमोनियम और सितार

(ख) दरी और चादर

(ग) मेज़पोश और गुलदस्ता

(घ) कुर्सी और तख्त

प्रेमा : लेकिन वह तुम्हारी लाडली बेटी तो मुँह फुलाए पड़ी है।

रामस्वरूप : मुँह फुलाए!... और तुम उसकी माँ, किस मर्ज की दवा हो? जैसे-तैसे करके तो वे लोग पकड़ में आए हैं। अब तुम्हारी बेवकूफ़ी से सारी मेहनत बेकार जाए तो मुझे दोष मत देना।

प्रेमा : तो मैं ही क्या करूँ? सारे जतन करके तो हार गई। तुम्हीं ने उसे पढ़ा-लिखाकर इतना सिर चढ़ा रखा है। मेरी समझ में तो ये पढाई-लिखाई के जंजाल आते नहीं। अपना जमाना अच्छा था। 'आई' पढ़ली, गिनती सीख ली और बहुत हुआ तो 'स्त्री-सुबोधिनी' पढ़ ली। सच पूछो तो 'स्त्री-सुबोधिनी' में ऐसी-ऐसी बातें लिखी हैं-ऐसी बातें कि क्या तुम्हारी बी.ए., एम.ए. की पढ़ाई में होगी। और आजकल के तो लच्छन ही अनोखे हैं....

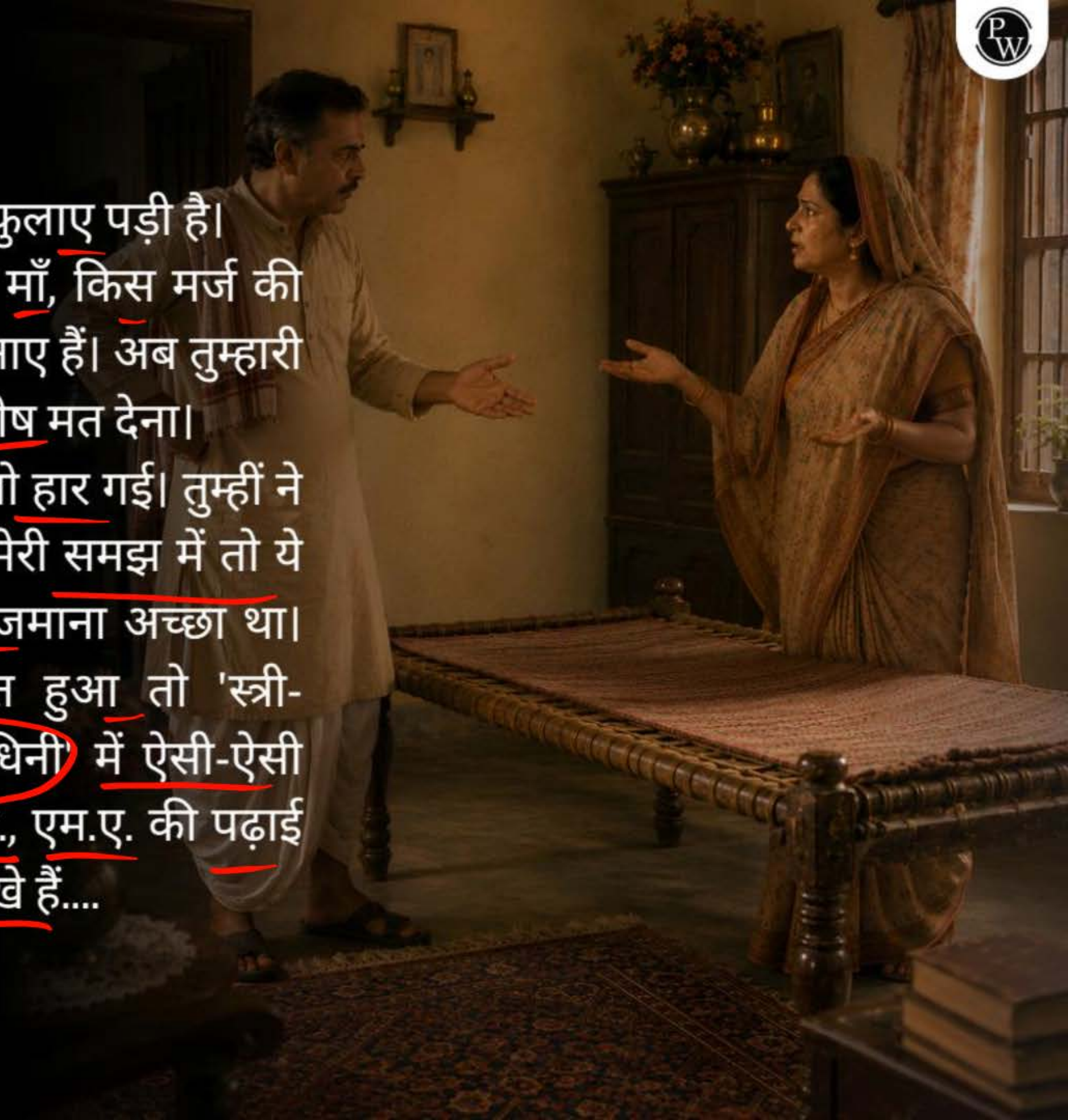

रामस्वरूप : ग्रामोफ़ोन बाजा होता है न?

प्रेमा : क्यों?

रामस्वरूप : दो तरह का होता है। एक तो आदमी का बनाया हुआ। उसे एक बार चलाकर जब चाहे तब रोक लो। और दूसरा परमात्मा का बनाया हुआ। उसका रिकार्ड एक बार चढ़ा तो रुकने का नाम नहीं।

प्रेमा : हटो भी। तुम्हें ठठोली ही सूझती रहती है। यह तो होता नहीं कि उस अपनी उमा को राह पर लाते। अब देर ही कितनी रही है उन लोगों के आने में।

रामस्वरूप : तो हुआ क्या?

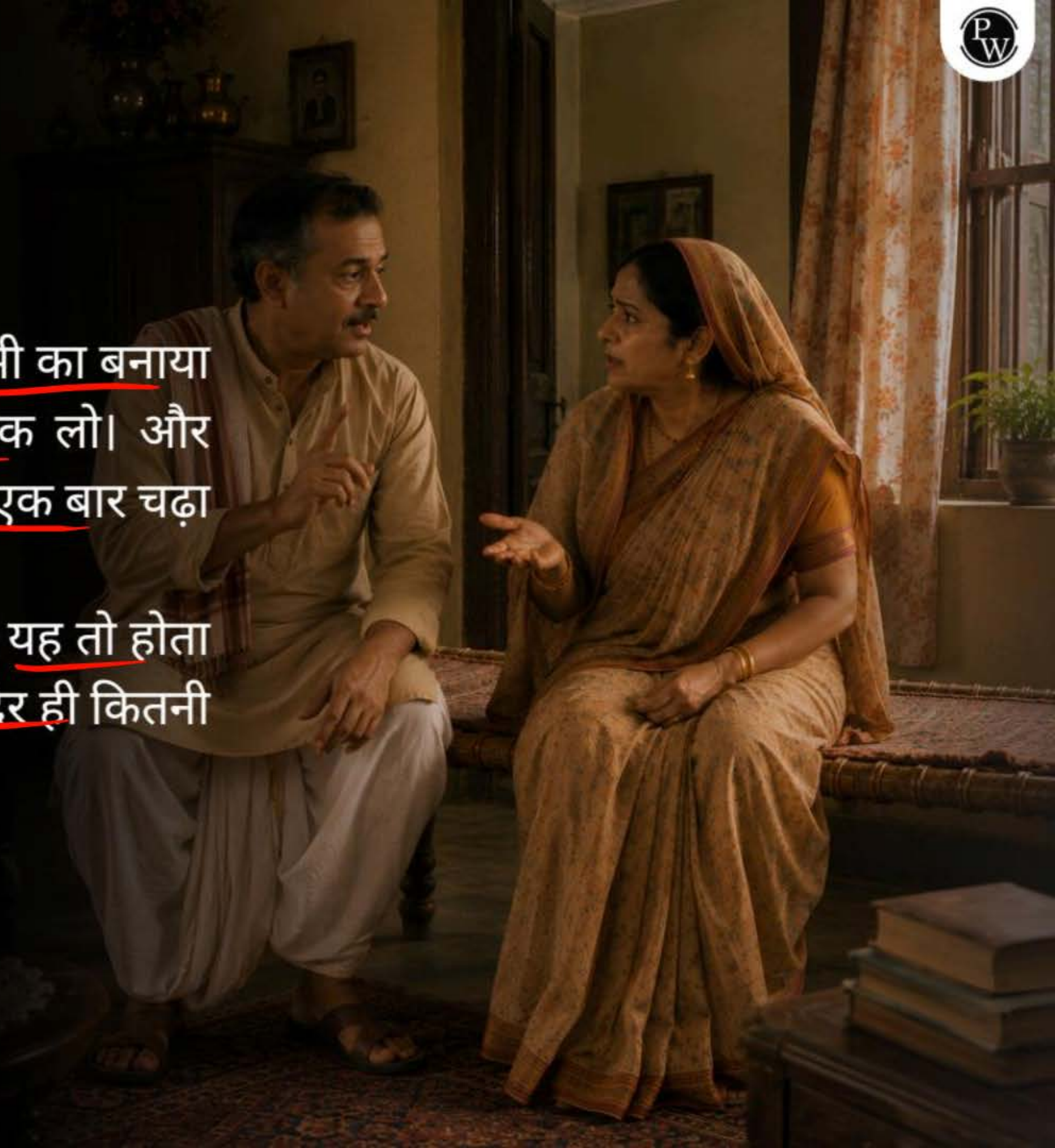

प्रेमा : तुम्हीं ने तो कहा था कि ज़रा ठीक-ठाक करके नीचे लाना। आजकल तो लड़की कितनी ही सुंदर हो, बिना टीमटाम के भला कौन पूछता है? इसी मारे मैंने तो पौडर-वौडर उसके सामने रखा था। पर उसे तो इन चीज़ों से न जाने किस जन्म की नफ़रत है। मेरा कहना था कि आँचल में मुँह लपेटकर लेट गई। भई, मैं बाज़ आई तुम्हारी इस लड़की से !

रामस्वरूप : न जाने कैसा इसका दिमाग है! वरना आजकल की लड़कियों के सहारे तो पौडर का कारबार चलता है।

प्रेमा : अरे मैंने तो पहले ही कहा था। इंट्रेन्स ही पास करा देते लड़की अपने हाथ रहती, और इतनी परेशानी न उठानी पड़ती। पर तुम तो...

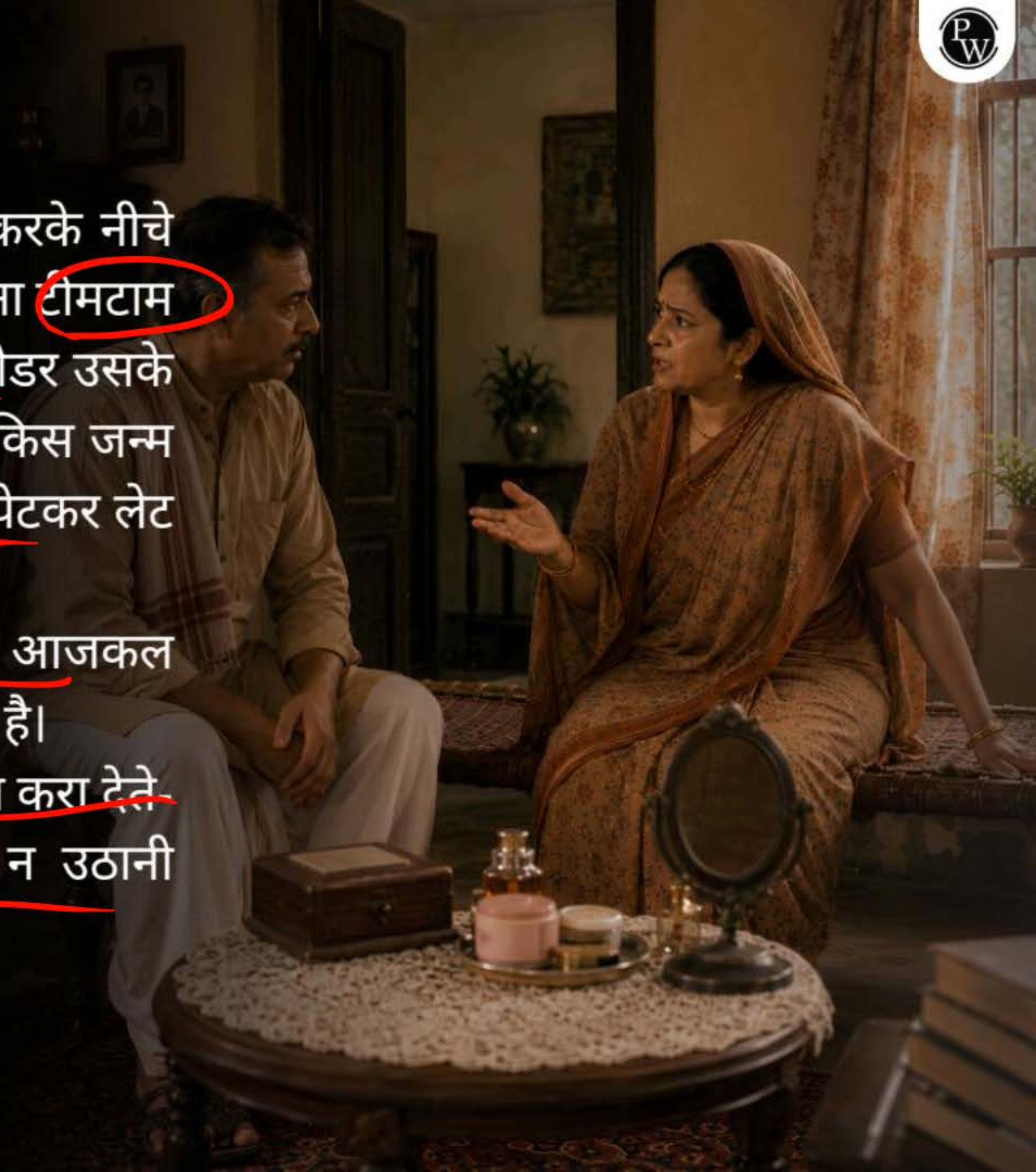

रामस्वरूप : (बात काटकर) चुप चुप... (दरवाज़े में झाँकते हुए) तुम्हें कतई अपनी जबान पर काबू नहीं है। कल ही यह बता दिया था कि उन सब लोगों के सामने जिक्र और ढंग से होगा। मगर तुम तो अभी से सब-कुछ उगले देती हो। उनके आने तक तो न जाने क्या हाल करोगी !

प्रेमा :अच्छा बाबा, मैं न बोलूँगी। जैसी तुम्हारी मर्जी हो, करना। बस मुझे तो मेरा काम बता दो।

रामस्वरूप : अच्छा तो उमा को जैसे हो तैयार कर लो। न सही पौडर। वैसे कौन बुरी है। पान लेकर भेज देना उसे। और, नाश्ता तो तैयार है न? (रतन का आना) आ गया रतन?... इधर ला, इधर ! बाजा नीचे रख दे। चद्दर खोल... पकड़ तो ज़रा उधर से। (चद्दर बिछाते हैं।)

प्रश्न

प्रेमा के अनुसार उमा किस बात से नफ़रत करती थी?

(क) पान खाने से

(ख) पढ़ाई करने से

(ग) पाउडर और बनाव-श्रृंगार की चीज़ों से

(घ) संगीत सीखने से

प्रश्न

रामस्वरूप ने प्रेमा को उमा के बारे में क्या करने के लिए कहा?

- **क** उसे घर से बाहर भेजने के लिए
- **ख** उसे जैसे-तैसे तैयार करने के लिए
- **ग** उसे पढ़ाई करने के लिए
- **घ** उसे पाउडर लगाने के लिए मजबूर करने के लिए

प्रश्न

रामस्वरूप ने प्रेमा को अपनी बात पर काबू रखने के लिए क्यों कहा?

(क) क्योंकि उमा नाराज़ हो रही थी

(ख) क्योंकि रतन वहाँ आ गया था

(ग) क्योंकि नाश्ता तैयार नहीं था

(घ) क्योंकि आने वाले लोगों के सामने सारी बातें नहीं बतानी थीं

प्रश्न

रामस्वरूप ने रतन को क्या करने के लिए कहा?

- **क** उमा को बुलाने के लिए
- **ख** पान और नाश्ता लाने के लिए
- **ग** प्रेमा के लिए पाउडर लाने के लिए
- **घ** बाजा नीचे रखने और चादर बिछाने में मदद करने के लिए

प्रेमा : नाश्ता तो तैयार है। मिठाई तो वे लोग ज़्यादा खाएँगे नहीं। कुछ नमकीन चीजें बना दी हैं। फल रखे हैं ही। चाय तैयार है, और टोस्ट भी। मगर हाँ, मक्खन ? मक्खन तो आया ही नहीं।

रामस्वरूप : क्या कहा? मक्खन नहीं आया? तुम्हें भी किस वक्त याद आई है। जानती हो कि मक्खन वाले की दुकान दूर है, पर तुम्हें तो ठीक वक्त पर कोई बात सूझती ही नहीं। अब बताओ, रतन मक्खन लाए कि यहाँ का काम करे। दफ़्तर के चपरासी से कहा था आने के लिए, सो नखरों के मारे...

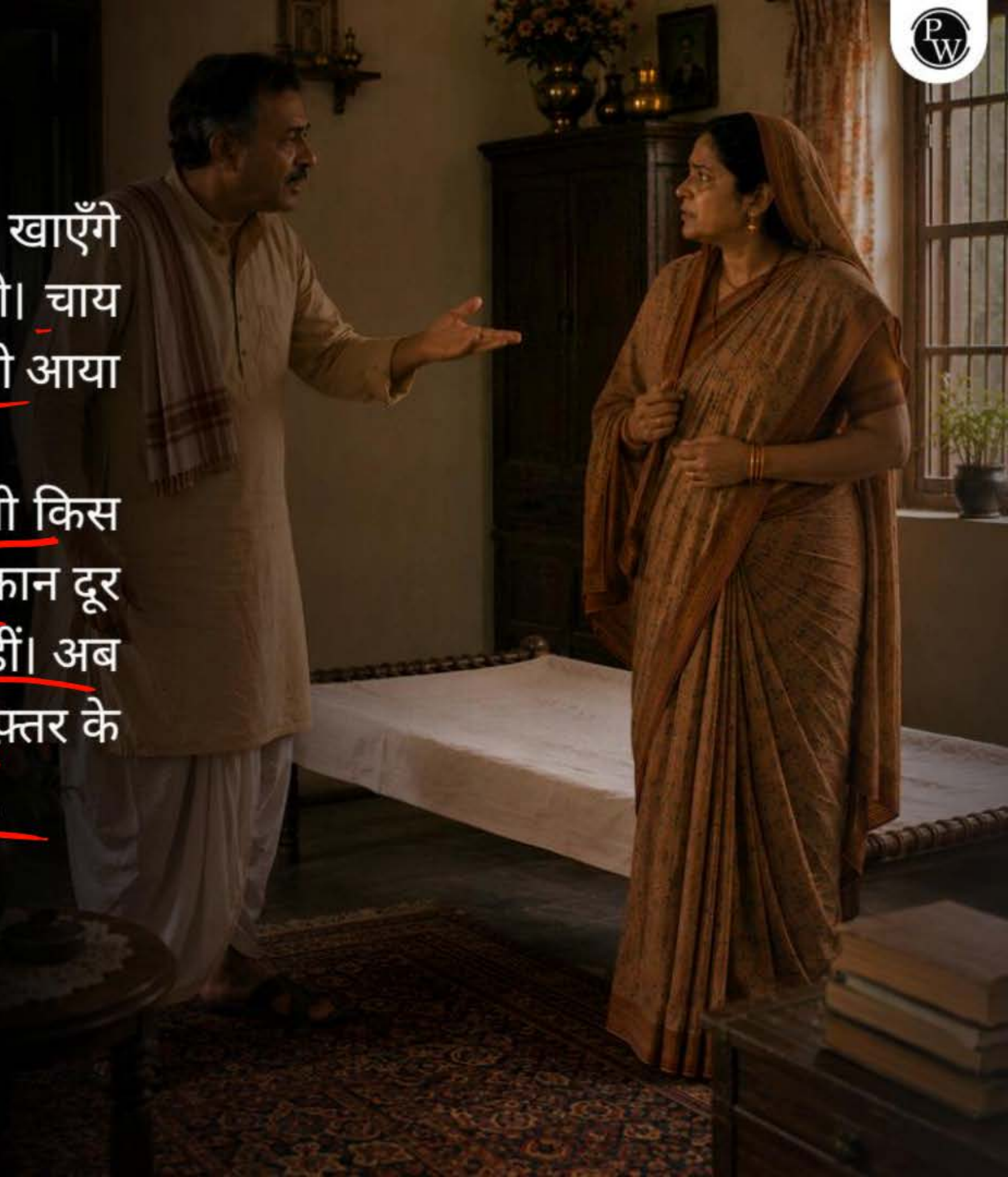

प्रेमा : यहाँ का काम कौन ज़्यादा है? कमरा तो सब ठीक-ठाक है ही बाजा-सितार आ ही गया। नाश्ता यहाँ बराबर वाले कमरे में "ट्रे" में रखा हुआ है सो तुम्हें पकड़ा दूँगी। एकाध चीज़ खुद ले आना। इतनी देर में रतन मक्खन ले ही आएगा... दो आदमी ही तो हैं।

रामस्वरूप : हाँ एक तो बाबू गोपालप्रसाद और दूसरा खुद लड़का है। देखो, उमा से कह देना कि जरा करीने से आए। ये लोग ज़रा ऐसे ही है... गुस्सा तो मुझे बहुत आता है इनके दकियानूसी खयालों पर। खुद पढ़े-लिखे हैं, वकील हैं, सभा-सोसाइटियों में जाते हैं, मगर लडकी चाहते हैं ऐसी कि ज्यादा पढ़ी-लिखी न हो।

प्रेमा : और लड़का ?

रामस्वरूप : बताया तो था तुम्हें। बाप सेर है तो लड़का सवा सेर। बी.एस.सी. के बाद लखनऊ में ही तो पढ़ता है मेडिकल कालेज में। कहता है कि शादी का सवाल दूसरा है, तालीम का दूसरा। क्या करूँ मजबूरी है। मतलब अपना है, वरना इन लड़कों और इनके बापों को ऐसी कोरी-कोरी सुनाता कि ये भी...

रतन : (जो अब तक दरवाजे के पास चुपचाप खड़ा हुआ था, जल्दी-जल्दी) बाबू जी, बाबू जी !

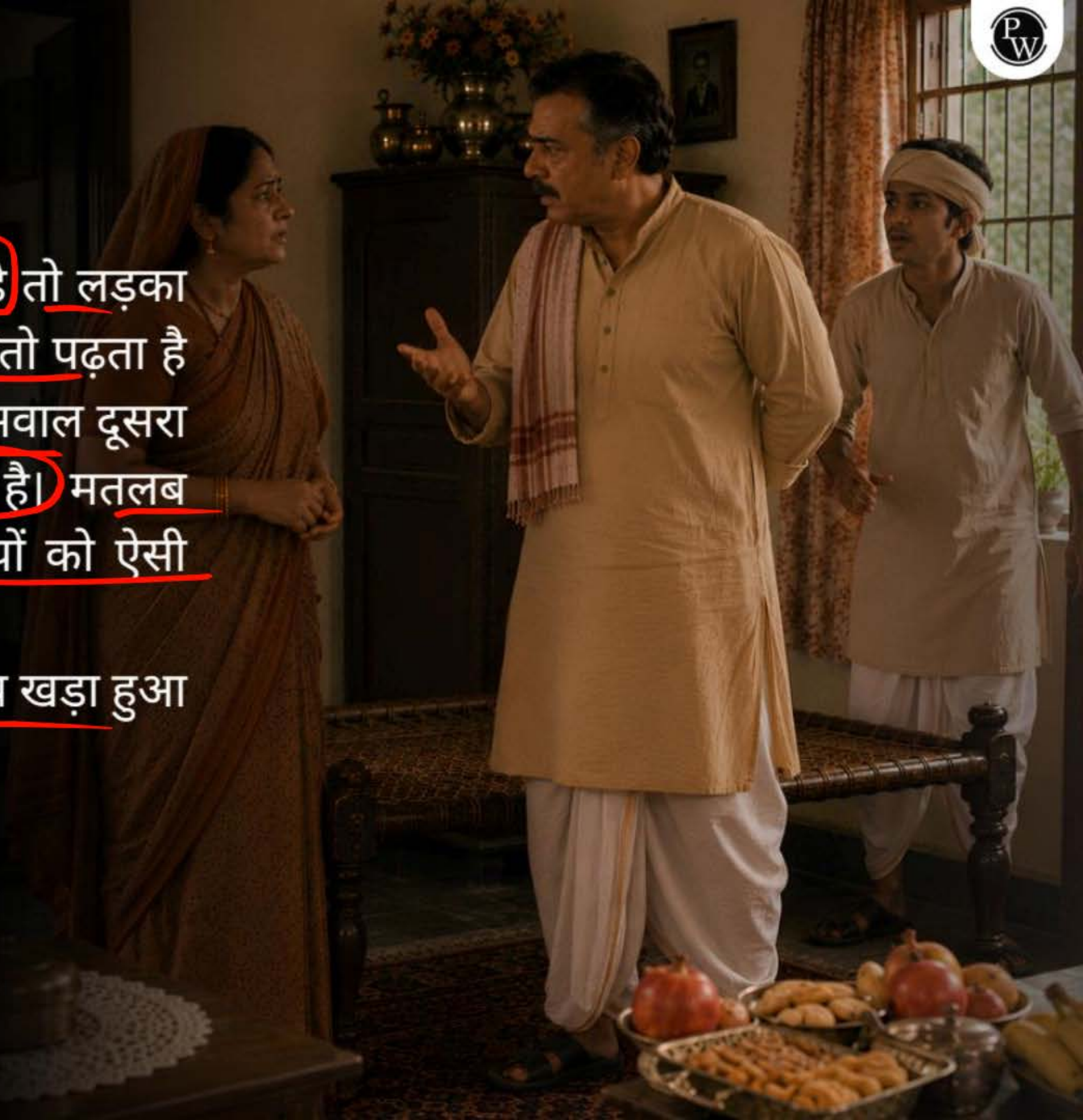

रामस्वरूप : क्या है?

रतन : कोई आते हैं।

रामस्वरूप : (दरवाज़े से बाहर झाँककर जल्दी मुँह अंदर करते हुए) अरे, ए प्रेमा, वे आ भी गए। (रतन पर नज़र पड़ते ही) अरे, तू यहीं खड़ा है, बेवकूफ़। गया नहीं मक्खन लाने? ...सब चौपट कर दिया। अबे उधर से नहीं, अंदर के दरवाज़े से जा (रतन अंदर आता है) ...

और तुम जल्दी करो प्रेमा। उमा को समझा देना थोड़ा-सा गा देगी। (प्रेमा जल्दी से अंदर की तरफ़ आती है। उसकी धोती ज़मीन पर रखे हुए बाजे से अटक जाती है।)

प्रेमा : उँह। यह बाजा वह नीचे ही रख गया है।

प्रश्न

रामस्वरूप के घर आने वाले मेहमानों के लिए नाश्ते में क्या-क्या तैयार था?

(क) मिठाई, फल और दूध

(ख) नमकीन, फल, चाय और टोस्ट

(ग) पूरी, सब्ज़ी और हलवा

(घ) समोसे, मिठाई और शरबत

प्रश्न

रामस्वरूप को किस बात पर चिंता हुई?

(क) चाय तैयार नहीं थी

(ख) फल नहीं आए थे

(ग) मक्खन नहीं आया था

(घ) मिठाई कम थी

प्रश्न

रामस्वरूप के अनुसार बाबू गोपाल प्रसाद और उनके बेटे की लड़कियों की शिक्षा के बारे में क्या सोच थी?

(क) लड़की बहुत अधिक पढ़ी-लिखी होनी चाहिए

(ख) लड़की को नौकरी करनी चाहिए

(ग) लड़की ज्यादा पढ़ी-लिखी नहीं होनी चाहिए

(घ) लड़की को केवल संगीत सीखना चाहिए

प्रश्न

रतन ने रामस्वरूप को क्या सूचना दी?

(क) मक्खन आ गया है

(ख) नाश्ता तैयार है

(ग) मेहमान आ गए हैं

(घ) उमा तैयार है

रामस्वरूप : तुम जाओ, मैं रखे देता हूँ... जल्दी। (प्रेमा जाती है, बाबू रामस्वरूप बाजा उठाकर रखते हैं। किवाड़ों पर दस्तक।)

रामस्वरूप : -हँ-हँ-हँ। आइए, आइए!... हँ-हँ-हँ।

(बाबू गोपालप्रसाद और उनके लड़के शंकर का आना। आँखों से लोक चतुराई टपकती है। आवाज़ से मालूम होता है कि काफ़ी अनुभवी और फितरती महाशय हैं। उनका लड़का कुछ खीस निपोरने वाले नौजवानों में से है। आवाज़ पतली है और खिसियाहट भरी। झुकी कमर इनकी खासियत है।)

रामस्वरूप : (अपने दोनों हाथ मलते हुए) हँ-हँ, इधर तशरीफ़ लाइए - इधर। (बाबू गोपाल प्रसाद बैठते हैं, मगर बेंत गिर पड़ता है।)

रामस्वरूप : यह बेंत!...लाइए मुझे दीजिए। (कोने में रख देते हैं। सब बैठते हैं।) हँ-हँ... मकान ढूँढ़ने में तकलीफ़ तो नहीं हुई?

गोपालप्रसाद :(खँखारकर) नहीं। ताँगेवाला जानता था।... और फिर हमें तो यहाँ आना ही था। रास्ता मिलता कैसे नहीं?

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ। यह तो आपकी बड़ी मेहरबानी है। मैंने आपको तकलीफ़ तो दी...

गोपालप्रसाद : अरे नहीं साहब ! जैसा मेरा काम, वैसा आपका काम। आखिर लड़के की शादी तो करनी ही है। बल्कि यों कहिए कि मैंने आपके लिए खासी परेशानी कर दी !

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! यह लीजिए, आप तो मुझे काँटों में घसीटने लगे। हम तो आपके – हँ-हँ... सेवक ही हैं- हँ-हँ। (थोड़ी देर बाद लड़के की ओर मुखातिब होकर) और कहिए, शंकर बाबू, कितने दिनों की और छुट्टियाँ हैं?

शंकर : जी, कॉलेज की तो छुट्टियाँ नहीं हैं। 'वीक-एंड' में चला आया था।

रामस्वरूप : तो आपके कोर्स खत्म होने में तो अब साल-भर रहा होगा?

शंकर : जी, यही कोई साल-दो-साल ।

रामस्वरूप : साल-दो-साल?

शंकर : हँ-हँ-हँ!... जी, एकाध साल का 'मार्जिन' रखता हूँ...

गोपालप्रसाद : बात यह है साहब कि यह शंकर एक साल बीमार हो गया था। क्या बताएँ, इन लोगों को इसी उम्र में सारी बीमारियाँ सताती हैं। एक हमारा ज़माना था कि स्कूल से आकर दर्जनों कचौड़ियाँ उड़ा जाते थे, मगर फिर जो खाना खाने बैठते तो वैसी-की-वैसी ही भूख !

रामस्वरूप : कचौड़ियाँ भी तो उस ज़माने में पैसे की दो आती थीं।

प्रश्न

बाबू गोपाल प्रसाद अपने बेटे शंकर के साथ रामस्वरूप के घर किस उद्देश्य से आए थे?

- **क** व्यापार की बातचीत करने
- **ख** शंकर की पढ़ाई के बारे में बात करने
- **ग** शंकर का विवाह तय करने
- **घ** रामस्वरूप से मिलने-जुलने

प्रश्न

बाबू गोपाल प्रसाद के व्यक्तित्व की कौन-सी विशेषता पाठ में स्पष्ट होती है?

(क) सरल और संकोची स्वभाव

(ख) चतुर और अनुभवी स्वभाव

(ग) शांत और विनम्र स्वभाव

(घ) डरपोक और असहाय स्वभाव

प्रश्न

शंकर रामस्वरूप के घर कब आया था?

- क गर्मियों की छुट्टियों में
- ख एक साल की छुट्टी में
- ग 'वीक एण्ड' में
- घ परीक्षा के बाद

प्रश्न

गोपाल प्रसाद के अनुसार शंकर एक साल क्यों पीछे रह गया था?

(क) उसने पढ़ाई छोड़ दी थी

(ख) वह एक साल बीमार हो गया था

(ग) उसने परीक्षा नहीं दी थी

(घ) वह कॉलेज नहीं जाता था

गोपालप्रसाद : जनाब, यह हाल था कि चार पैसे में ढेर-सी मलाई आती थी। और अकेले दो आने की हज़म करने की ताकत थी, अकेले ! और अब तो बहुतेरे खेल वगैरह भी होते हैं, स्कूलों में। तब न कोई वॉली-बॉल जानता था, न टेनिस न बैडमिंटन। बस कभी हॉकी या क्रिकेट कुछ लोग खेला करते थे। मगर क्या मजाल कि कोई कह जाए कि यह लड़का कमजोर है। (शंकर और रामस्वरूप खीस निपोरते हैं।)

(शंकर और रामस्वरूप खीसें निपोरते हैं।)

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ, उस ज़माने की बात ही दूसरी थी... हँ-हँ!

गोपालप्रसाद : (जोशीली आवाज़ में) और पढ़ाई का यह हाल था कि एक बार कुर्सी पर बैठे कि बारह घंटे की 'सिटिंग' हो गई, बारह घंटे ! जनाब, मैं सच कहता हूँ कि उस जमाने का मैट्रिक भी वह अंग्रेज़ी लिखता था फ़र्राटे की, कि आजकल के एम.ए. भी मुकाबिला नहीं कर सकते।

रामस्वरूप : जी हाँ, जी हाँ! यह तो है ही।

गोपालप्रसाद : माफ़ कीजिएगा बाबू रामस्वरूप, उस ज़माने की जब याद आती है, अपने को ज़ब्त करना मुश्किल हो जाता है!

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ!... जी हाँ वह तो रंगीन जमाना था, रंगीन जमाना। ! हँ-हँ-हँ!(शंकर भी ही-ही करता है।)

गोपालप्रसाद : (एक साथ अपनी आवाज़ और तरीका बदलते हुए) अच्छा, तो साहब, 'बिज़नेस' की बातचीत हो जाए।

रामस्वरूप : (चौंककर) बिजनेस? बिज... (समझकर) ओह... अच्छा, अच्छा। लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए। (उठते हैं।)

गोपालप्रसाद : यह सब आप क्या तकल्लुफ़ करते हैं।

रामस्वरूप : हँ-हँ-हँ! तकल्लुफ़ किस बात का? हँ-हँ-हँ!। यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए। वरना मैं किस काबिल हूँ। हँ-हँ!.. माफ़ कीजिएगा जरा। अभी हाज़िर हुआ।

(अंदर जाते हैं।)

गोपालप्रसाद : (थोड़ी देर बाद दबी आवाज़ में) आदमी तो भला है। मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है।

शंकर : जी... (कुछ खँखारकर इधर-उधर देखता है।)

प्रश्न

गोपाल प्रसाद के अनुसार उनके ज़माने में चार पैसे में क्या मिलता था?

(क) ढेर-सी मिठाई

(ख) ढेर-सी मलाई

(ग) ढेर-से फल

(घ) ढेर-सी कचौड़ियाँ

प्रश्न

गोपाल प्रसाद के अनुसार उनके ज़माने में स्कूलों में कौन-से खेल प्रचलित नहीं थे?

(क) हॉकी और क्रिकेट

(ख) वॉली-बॉल, टेनिस और बैडमिंटन

(ग) क्रिकेट और टेनिस

(घ) हॉकी और बैडमिंटन

प्रश्न

गोपाल प्रसाद के अनुसार उनके ज़माने में पढ़ाई करने का क्या ढंग था?

- **क** रोज़ केवल दो घंटे पढ़ना
- **ख** बारह घंटे तक लगातार पढ़ाई करना
- **ग** खेलते हुए पढ़ाई करना
- **घ** केवल परीक्षा के समय पढ़ना

प्रश्न

गोपाल प्रसाद ने रामस्वरूप से धीमी आवाज़ में क्या कहा?

क रामस्वरूप का मकान बहुत बड़ा है

ख नाश्ता बहुत अच्छा है

ग शंकर की पढ़ाई पूरी हो गई है

घ रामस्वरूप आदमी भला लगता है और अब लड़की को देखना है

गोपालप्रसाद : क्यों, क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गोपालप्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन'... (इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिए हुए। मेज़ पर रख देते हैं)

गोपालप्रसाद : आखिर आप माने नहीं।

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ! आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

गोपालप्रसाद : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। ज़रा चीनी भी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफी होता है, फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए तो जायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप : हैं-हैं, कहते तो आप सही हैं।

(प्याला पकड़ाते हैं।)

शंकर : (खंखारकर) सुना है, सरकार अब ज्यादा चीनी लेने वालों पर 'टैक्स' लगाएगी।

गोपालप्रसाद : (चाय पीते हुए) हूँ। सरकार जो चाहे सो कर ले; पर अगर आमदनी करनी है तो सरकार को बस एक ही टैक्स लगाना चाहिए।

रामस्वरूप : (शंकर को प्याला पकड़ाते हुए) वह क्या?

गोपालप्रसाद : खूबसूरती पर टैक्स ! (रामस्वरूप और शंकर हँस पड़ते हैं) मज़ाक नहीं साहब, यह ऐसा टैक्स है जनाब कि देने वाले चूँ भी न करेंगे। बस शर्त यह है कि हर एक औरत पर यह छोड़ दिया जाए कि वह अपनी खूबसूरती के 'स्टैंडर्ड' के माफ़िक अपने ऊपर टैक्स तय कर ले। फिर देखिए...

रामस्वरूप : (ज़ोर से हँसते हुए) वाह-वाह ! खूब सोचा आपने ! वाकई आजकल यह खूबसूरती का सवाल भी बेढब हो गया है। हम लोगों के ज़माने में तो यह कभी उठता भी न था। (तश्तरी गोपालप्रसाद की तरफ़ बढ़ाते हैं) लीजिए।

गोपालप्रसाद : (समोसा उठाते हुए) कभी नहीं साहब, कभी नहीं।

रामस्वरूप : (शंकर की तरफ़ मुखातिब होकर) आपका क्या खयाल है शंकर बाबू?

शंकर : किस मामले में?

रामस्वरूप : यही कि शादी तय करने में खूबसूरती का हिस्सा कितना होना चाहिए।

गोपालप्रसाद : (बीच में ही) यह बात दूसरी है बाबू रामस्वरूप, मैंने आपसे पहले भी कहा था, लड़की का खूबसूरत होना निहायत ज़रूरी है। कैसे भी हो, चाहे पाउडर वगैरह लगाए, चाहे वैसे ही। बात यह है कि हम आप मान भी जाएँ, मगर घर की औरतें तो राजी नहीं होतीं। आपकी लड़की तो ठीक है?

प्रश्न

गोपाल प्रसाद के अनुसार शंकर एक साल क्यों पीछे रह गया था?

- **क** आराम से बैठने के लिए
- **ख** कमर सीधी करके बैठने के लिए
- **ग** कुर्सी बदलकर बैठने के लिए
- **घ** खड़े होकर बात करने के लिए

प्रश्न

गोपाल प्रसाद चाय में क्या पसंद करते थे?

(क) बिना दूध और कम चीनी

(ख) आधा दूध, आधी चाय और अधिक चीनी

(ग) अधिक दूध और कम चीनी

(घ) केवल दूध और चीनी

प्रश्न

गोपाल प्रसाद ने मज़ाक में किस चीज़ पर टैक्स लगाने की बात कही?

(क) पढ़ाई पर

(ख) चाय पर

(ग) खेलों पर

(घ) खूबसूरती पर

प्रश्न

गोपाल प्रसाद के अनुसार शादी तय करने में लड़की के किस गुण को बहुत ज़रूरी माना गया?

(क) अधिक पढ़ाई

(ख) नौकरी

(ग) खूबसूरती

(घ) संगीत-कला

रामस्वरूप : जी हाँ, वह तो अभी आप देख लीजिएगा।

गोपालप्रसाद : देखना क्या। जब आपसे इतनी बातचीत हो चुकी है, तब तो यह रस्म ही समझिए।

रामस्वरूप : हँ-हँ, यह तो आपका मेरे ऊपर भारी एहसान है। हँ-हँ !

गोपालप्रसाद : और जायचा (जन्मपत्र) तो मिल ही गया होगा?

रामस्वरूप : जी, जायचे का मिलना क्या मुश्किल बात है। ठाकुर जी के चरणों में रख दिया। बस, खुद-ब-खुद मिला हुआ समझिए।

Homework

इसे पढ़कर आना।

THANK YOU